क्षमादान

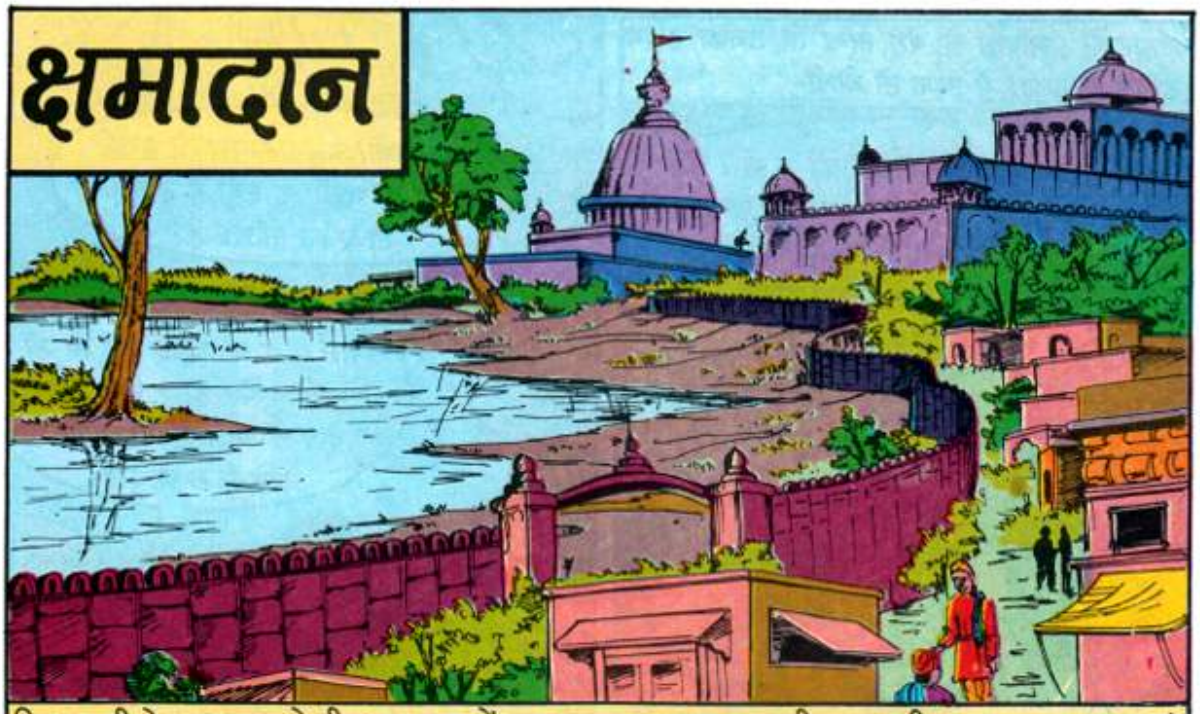

सिन्धु नदी के तट पर बसे वीतभय पट्टन में राजा उदायन नामक एक वीर, साहसी राजा राज्य करता था। उदायन उदार हृदय एवं धार्मिक प्रकृति का राजा था,वह भवानी देवी का परमभक्त था। उसने अपने पराक्रम से आस-पास के सोलह राज्यों को जीतकर अपने देश की सीमाओं का विस्तार कर लिया था।

राजा उदायन का विवाह मगध के राजा चेटक की पुत्री प्रभावती से हुआ था। महारानी प्रभावती कोमल हृदय वाली स्त्री थी। वह भगवान महावीर के सिद्धान्तों का पालन करती थीं। राजा उदायन अपनी रानी से बहुत प्रेम करता था।

एक बार राजा उदायन महारानी प्रभावती के साथ बैठे थे तभी राज पुरोहित कक्ष में आये।

महारानी प्रभावती ने यह सुना तो उनका हृदय द्रवित हो गया। वे राजा से बोलीं-

महाराज! इतने पशुओं की हत्या ! यह घोर पाप है। माँ भवानी तो जगत की माँ हैं। वह इन निरीह पशुओं का वध कराकर कैसे प्रसन्न होंगी। आप ऐसा घोर पाप न कीजिए।

महारानी! यह परम्परा तो हमारे पुरखों से चली आ रही है इसे कैसे रोका जा सकता है?

अगर बलि न चढ़ाई गई तो माँ भवानी कुपित हो जायेंगी और देश में अकाल, महामारी आदि फैल जायेंगी।

यह सुनकर रानी बोली-

तो ठीक है महाराज, आप ऐसा करें रात्रि के समय कुछ पशु माँ भवानी के मन्दिर के प्रांगण में छोड़ दें अगर माँ की इच्छा होगी तो वह इन पशुओं के प्राण अपने आप हर लेंगी।

और अगर अगले दिन यह पशु जिन्दा रहे तो आप माँ की इच्छा समझकर बलि चढ़ाना बन्द कर देंगे।

ठीक है महारानी हमें आपकी शर्त स्वीकार है।

उस रात राजा उदायन के आदेशानुसार मन्दिर के प्रांगण में पशुओं को बन्द कर दिया गया। और चारों ओर कड़ा पहरा लगा दिया गया।

अगले दिन प्रातः मन्दिर के दरवाजे के सामने बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई। लोग तरह-तरह की अटकलें लगाने लगे परन्तु जब दरवाजा खोला गया तो मन्दिर के प्रांगण में सब पशु जीवित अवस्था में विचर रहे थे। यह देखकर लोग अचम्भित हो गये।

आश्चर्य ! सभी पशु जीवित हैं।

और खुश हाल भी है...?

शायद माँ हमसे नाराज हैं इसलिये बलि स्वीकार नहीं की।